[illegible]

[illegible]

द्वितीय अध्याय

अमृतलाल नागर के साहित्य का संक्षिप्त परिचय ---

हिन्दी उपन्यास का वास्तविक प्रारंभ प्रेमचंद के आगमन से होता है।

" हिन्दी साहित्य में उपन्यास का वास्तविक स्वरुप पहले, पहल प्रेमचन्द के उपन्यासों में ही दिखायी पडता है।"[१]

नागर साहित्य क्षेत्र में एक ऐसा व्यक्तित्व लेकर आये जो एक साथ ही प्रेमचन्द के व्यक्तित्व का रुपांतरण भी है, और आधुनिक बोध का प्रतीक भी हैं। जिसमें इतिहास का वह अंश भी हैं जो हमें यहाँतक पहुँचा गया हैं और आधुनिक चेतना का वह रंग भी हैं जो अतीत से वर्तमान और वर्तमान से भावी की ओर मो मुढ जाता हैं। उल्लेखनीय तथ्य यह हैं कि नागर ऐसा इसलिये कर सकें की वे एक साथ ही बहुत कुछ थें -- उपन्यास कार, कहानि कार, रेखा-चित्र कार, संस्मरण कर्ता, नाटय सर्जक और व्यंग्य लेखक । वे पत्रकार भी थे, अनुवादक भी थे और स्वतंत्र प्रकृति के होने के कारण तथा समय की आवाज को सुनते हुए फिल्मो कथाओं के लेखक भी ।

नतीजा यह की नागर औपन्यासक सृजन में जिंदगी के बहुत से रंग उनकी कल्पना के ` ब्रश ` की वार्निश से चमक उठे हैं। उनके अधिकांश उपन्यास सामाजिक जीवन की गतिविधियों की मुँहबोली तस्वीरें हैं।

---

१ रामदशरथ सिंह - हिन्दी उपन्यास एक यात्रा - पृ.१५।

कहानी-साहित्य --

१) नवाबी मनसद । १९३९

२) तुलाराम शास्त्री । १९४१

३) एटम बम । १९५६

४) पीपल की परी । १९६२

५) कालदण्ड की चोरी । १९६३

६) मेरी प्रिय कहानियाँ । १९७०

७) पाँचवा दस्ता और सात अन्य । १९७०

८) भारतपुत्र नौरंगीलाल । १९७१

९) सिकंदर हार गया । १९७३ ।

नाटक

१) युगावतार । १९५६

२) नुक्कड पर १९६३

३) बात की बात (प्रहसन) १९७४

४) परित्याग

५) चमक्दार सीढियाँ

६) उतार-चढाव

७) चंदन वन (रेडिओ एकांकी)

८) चढत न दूजो रंग १९८२

विविध - साहित्य -

जीवनी

१) चैतन्य महाप्रभु --

संस्मरण

१) जिनके साथ जिया १९७३

सर्वेक्षण कार्य

१) गदर के फूल १९५७

२) ये कोठेवालियाँ १९६१

उपन्यास साहित्य --

१) महाकाल	१९४७
२) सेठ बाँकेमल	१९५५
३) बूँद और समुद्र	१९५६
४) शतरंज के मोहरे	१९५९
५) सुहाग के नुपूर	१९६०
६) अमृत और विष	१९६६
७) सात घुंघटवाला मुखडा	१९६८
८) एकदा नैमिष्यारण्ये	१९६८
९) मानस का हंस	१९७१
१०) नाच्यौ बहुत गोपाल	१९७८
११) खंजन नयन	१९८१
१२) बिखरे तिनके	१९८२
१३) आग्निगर्भा	१९८३
१४) करवट	

अमृतलाल नागर जी का प्रथम उपन्यास `महाकाल` सन १९४७ में प्रकाशित हुआ और इस उपन्यास ने ही हिन्दी साहित्य जगत को नागर जी की पहचान करा दीं । अबतक उनके तेरह उपन्यास प्रकाशित हुए हैं । प्रकाशन क्रम से उनके उपन्यासों का परिचय इस प्रकार है ।

१) महाकाल (१९४७) --

नागर जी का प्रथम उपन्यास जो सन १९४३ के बंग दुर्भिक्ष की इतिहास प्रसिध्द घटना पर आधारित है । इस उपन्यास में बंगाल के अकाल की स्थिति का रोमांचकारी चित्रण किया गया है । इस उपन्यास के नवीन संस्करण का नाम `भूख` (१९७०) में रखा गया है । इसके संबंध में नागर जी ने स्वयं लिखा है --

" जो नाम २६ वर्ष पहले अकाल की स्मृति ताजी होने के कारण पाठकों के मन में अपना स्पष्ट अर्थ बोध करा सकने में समर्थ था, वह अब अकाल से संबंधित

जन समर्थ था, वह अब अकाल से संबंधित जन स्मृति के पुरानी पड जाने के कारण शायद दुरुह हो गया हैं ।" २

उपन्यास का यह नाम परिवर्तन सार्थक है क्योंकि वह उपन्यास के कथ्य को भूख मानव की शाश्वत समस्याओं से जोड देता है । नागर जी का यह प्रथम उपन्यास अपने यथार्थ अंकन मार्मिक विश्लेषण और लेखकीय विचारधारा का सशक्त निदर्शक हैं ।

२) सेठ बाँकेमल (१९५५) --

सेठ बाँकेमल नागर जी का एक विशिष्ट उपन्यास हैं । इसमें परंपरागत उपन्यास शिल्प से हटकर अभिव्यक्ति का एक नया रुप व्यक्त हुआ है । इसमें न तो कोई श्रृंखलाबध्द कथा है और न ही योजनाबध्द चरित्र सभी दृष्टी से नया प्रयोग हैं । प्रयोग द्वारा जो नया कथ्य अभिव्यक्त होता है, वही महत्वपूर्ण होता है । अज्ञेय जी ने एक स्थान पर कहा है ---

" केवल प्रयोगशीलता किसी रचना को बना नहीं लेती । हमारे प्रयोग का पाठक या सहृदय के लिए कोई महत्व नहीं हैं । महत्व उसका है जो प्रयोग द्वारा हमें प्राप्त होता है ।" ३

` सेठ बाँकेमल ` आगरे का प्रसिध्द व्यापारी है । यह अपने स्वर्गवासी मित्र के चौबे के साथ बितायी गये जिन्दगी के रोचक प्रसंग चौबे के पुत्र को बताता है । वह अपनी दुकान पर बैठकर अतीत जीवन के किस्से अपनी खास भाषा और खास अंदाज में सुनाता है । किस्से की श्रृंखला के साथ ही उपन्यास की कथा प्रारंभ होती हैं और दुकान बंद करने के साथ ही किस्सों की श्रृंखला रुक जाती है तथा उपन्यास भी समाप्त होता है ।

---

२ अमृतलाल नागर` भूख `, भूमिका - पृ.७ ।

३ अज्ञेय, -` दूसरा तार - सप्तक `, भूमिका - पृ.८ ।

३) ` बूँद और समुद्र ` (१९५६) --

इस उपन्यास की चर्चा अगले अध्याय में विस्तार से करेंगे ।

४) शतरंज के मोहरे (१९५९) --

नागर जी के ऐतिहासिक उपन्यासों में प्रथम है ` शतरंज के मोहरे ` यह उपन्यास सन १८२० से १९३७ के अवध के नवाबी शासन काल पर आधारित है । लेखक ने शाहे अवध गाल्लीउद्दीन हैदर और उसके पूत्र नसीरुद्दीन हैदर के शासन काल के इतिहास को उपन्यस्त किया है । उपन्यास इतिहास सम्मत घटनाओं पर आधारित है और अवध के नवाबी शासनकाल की राजनीतिक गतिविधियों एवं सामाजिक दुरावस्था का सूक्ष्म चित्रण करता है । नागर जी के अवध के इतिहास के गहरे जानकार हैं अत: प्रस्तुत उपन्यास इतिहास की प्रामाणिक जानकारी पर आधारित है । काल्पनिक पात्र और घटनायें भी ऐतिहासिक तथ्यों की पूरी रक्षा करते हैं, अत: इसे शुध्द ऐतिहासिक उपन्यास कहा जा सकता है ।

५) सुहाग के नुपूर (१९६०) --

` सुहाग के नुपूर ` नागर जी का मिश्र ऐतिहासिक उपन्यास है । इसकी रचना ई.सा की प्रथम शताब्दी में रचित तमिल भाषा के महाकवि इलंगोवन के प्रसिध्द महाकाव्य ` शिलप्पादिकारम् ` के आधारपर की गयी है । दक्षिण भारत की प्राचीन ऐतिहासिक संस्कृती तथा सामाजिक पृष्ठभूमिपर उपन्यास की रचना की है । इस उपन्यास की विशेषता यह है कि नागर जी ने ऐतिहासिक कथानक को एक गहरे सामाजिक आशय से संपृक्त करके प्रस्तुत किया है । उपन्यास का संबंध समाज व्यवस्था में नारी की स्थिति से है । उपन्यास में नारी समस्या से संबंधित होने के कारण युगों से संबंधित होने के कारण युगों से प्रेरित नारी व्यथा व्यक्त करता है । लेखक ने नारी शोषण की शाश्वत समस्या को इतिहास से खोज निकालना चाहा है इस उपन्यास को मिश्र ऐतिहासिक उपन्यास कहा जा सकता है । इसमें इतिहास और औपन्यासिक कल्पना का सुन्दर सामंजस्य है ।

६) अमृत और विष (१९६६) --

` अमृत और विष ` नागर जी का बृहद सामाजिक उपन्यास है, जिसमें स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज के बदलते प्रतिमानों का मध्यम वर्गीय चेतना का लेखा-जोखा प्रस्तुत करके नागर जी की दृष्टी आजादी के बाद भारत में उत्पन्न समस्याएँ और उनके समाधान की ओर प्रवृत्त हुई है। सामाजिक जीवन के चित्रण में लेखक की ऐतिहासिक दृष्टी मुखर हुई है। विक्टोरिया पंचू के राज से लेकर लगभग सन १९६० तक के भारतीय समाज के प्रत्येक परिवर्तन और स्पंदन का चित्रांकन उपन्यास में है। देश की युवा-शक्ति वैज्ञानिक तथा प्रगतिशील दृष्टीकोण से समाज व्यवस्था में और गूढ मान्यताओं में परिवर्तन लाने का प्रयत्न करती है। युवकों में कितनी शक्ती है, वे किस प्रकार सामाजिक विकास में अपना योगदान दे सकते हैं और गलतियाँ करने के बावजुद जनता की सहानुभूति पाकर उसे सही दिशा दे सकते है, इसका मार्मिक चित्रण इस उपन्यास में हुआ है।

` अमृत और विष ` में नागरजी की उपन्यास कला का प्रौढ रुप दिखायी देता है। स्वातंत्र्योत्तर भारत में सामाजिक जीवन की गतिशील पृष्ठभूमि में इसमें अंकित हुई है। भारतीय युवकों की समस्याओं को यथार्थ रुप में प्रस्तुत करनेवाला यह हिन्दी का पहला उपन्यास है और हिन्दी के प्रथम श्रेणी के उपन्यासों में स्थान पाने का अधिकारी है।

७) सात घूँघटवाला मुखडा (१९६८) --

` सात घूँघटवाला मुखडा ` राजनीतिक उद्देश्य और पृष्ठभूमिपर आधारित होने पर भी मुख्यत: श्रृंगारिक रचना है। नायिका का जीवन चरित्र विभिन्न उतार चढावों से परिपूर्ण है। घटनाओं के बाहुल्य के कारण उसके चरित्र के अनेक रुप प्रकट होते हैं। वह सबसे अपना स्वार्थ बाँधकर भी एकाकिनी है। उसके विभिन्न नाम चरित्र विकास - विश्लेषण के परिचायक हैं - मुन्नी, दिलाराम, बेगम समरु जुआना, टामस प्रिया आदि उसकी स्थितियों का स्पष्ट संकेत करते हैं। लेखक ने स्वयं उसके चरित्र को रहस्यात्मकता का आवरण दिया है -

" जुआना अब अपने हसीन चेहरेपर तीसरे भाव का मुखौटा चढाने बैठी । दिल की सात तहों के भीतर जुआना अब भी ईमान और इन्सायिनत के हुस्न पर मरती है, मगर हठीला होने के वजह से बशीर खाँ से धोखा खाने के बाद उसने अपने को पत्थर की तरह सख्त बनाना शुरु किया ।" ४

जुआना का यह अंतिम रुप मानव मन का सत्य प्रकट करता है जब वह सब ओर से निराश होकर केवल ईश्वर की शरण में जाता है ।

८) एकदा नैमिक्यारण्ये (१९६८) --

` एकदा नैमिक्यारण्ये ` संपूर्ण आर्थावर्त के इतिहास में मानवतावाद की प्रतिष्ठा करता है ` वसुधैव कुटुम्बकम् ` की भावना इस समग्र ऐतिहासिक चेतना का मूल स्वर है । यह मूल स्वर ही प्राचीनता को नवीनता का संदेश देता है । लेखक ने प्राचीन मनीषा और आधुनिक मनिषा के मध्य सेतुबन्ध का प्रयत्न किया है । अनासक्त कर्मयोग आस्था ज्ञात भक्ति और कर्म का समन्वय पौराणिक लोक भूमिपर अवस्थित होकर भी चिरन्तन जनमानस के लिए कल्याणकारी है । कहना यह है कि नागर जी ने यह काम कर दिखाया है । संस्कृति के मन को विरोना आसान हो सकता है, किन्तु संस्कृति के मनकों से रोचक, किन्तु आधुनिक संदर्भ संकेतों की औपन्यासिक माला कोई प्रबुध्द चेता और कलाकार ही गूँथ सकता है । यह उपन्यास पहला प्रमाण है ।

९) मानस का हंस (१९७१) --

` मानस का हंस ` गोस्वामी तुलसीदास के जीवन के विविध पक्षों का संजीव चित्रण है । महाकवि तुलसीदास के गौरवपूर्ण बाल चरित के पीछे व्यक्तिगत संघर्ष प्रेरणाओं और अनुभूतियों का मार्मिक चित्रण तुलसी चरित को पूर्णत: प्रदान करता है । नागर जी ने तुलसी के जीवन को इन्हीं अंतरंग झाँकियों से संवार कर उन्हें तेजस्वी रुप प्रदान किया है, किन्तु ` मानस का हंस ` में तुलसी की भक्ति के प्रेक्ष्य में ` कात और राम ` के द्वन्द्व को उभारा गया है । तुलसी के साहित्य

---

४ अमृतलाल नागर - ` सात घूंघटवाला मुखडा ` - पृ.८३२ ।

में नारी आकर्षण कहीं भी उभर नहीं पाया है । यद्यपी नागर जी ने तुलसी पर लगाये गये नारी विरोधी आक्षेपों का निराकरण करना चाहा है, किन्तु उनका काम रुप समुचे उपन्यास कार पर छाया हुआ प्रतीत होता है ।

१०) नाच्यौं बहुत गोपाल (१९७८) --

' नाच्यौं बहुत गोपाल ' नागर जी का विशिष्ट सामाजिक उपन्यास हैं । इसमें समाज के संपूर्ण जीवन का चित्र न होकर एक विशिष्ट वर्ग का ही चित्रण किया गया हैं । लेखक की दृष्टी समाज के सबसे अधिक दलित एवं पीडित वर्ग के अत्याचारों के जीवन पर ही केन्द्रित हुई हैं । समाज के सर्वथा उपेक्षित अछूतों मेहत्तर वर्ग को जीवन की अंतरंग झाँकी लेखक ने उतारी हैं । इस वर्ग के रीति-रिवाज, रहन-सहन, संस्कार-कुसंस्कार आदि का प्रामाणिक लेखा-जोखा चित्र प्रस्तुत किया गया है ।

११) बिखरे तिनके (१९८२) --

' बिखरे तिनके ' में देश की वर्तमान राजनीतिक एवं सामाजिक अवस्था का जीवंत चित्रण हैं । यह कृति राजनीति एवं अफसरशाही के यथार्थ का अत्यंत सफलता के साथ निरुपीत करती हैं । किस तरह वर्तमान राजनीति एवं राजकीय नेता देश एवं समाज को पतन की ओर ले जा रहे हैं इसका वास्तव चित्रण किया है । इसमें मुख्य रुप से राजनीतिक गतिविधियों के चित्रण को ही प्रमुखता दी हैं । अत: बिखरे तिनके को राजनीतिक उपन्यास कहा जा सकता है । परंतु वर्तमान स्थिति में राजनीति और समाज एक दूसरे से इतने मिल गये हैं, कि उसे अलग नहीं किया जा सकता । यह कृति उपन्यास शिल्प की दृष्टी से अत्यंत सामान्य कोटि की हैं ।

अत: बिखरे - तिनके साधारण कोटि का उपन्यास होते हुए भी ' बिखरे - तिनके ' में नागर जी की यथार्थवादी दृष्टी और लेखकीय प्रतिभा के छीटे विद्यमान हैं । परन्तु नागर जी से हम जिस सूक्ष्म और गंभीर राजनीतिक विश्लेषण की अपेक्षा करतें हैं, उसकी पूर्ति इस उपन्यास में हुई हैं ।

१२) आग्निगर्भा (१९८३) --

` आग्निगर्भा ` नागर जी का समस्या गर्भित उपन्यास हैं । और इसमें नागर जी की दृष्टी दहेज समस्या और नारी शोषण की समस्या पर ही केन्द्रित हुई है । नागर जी ने अपने अन्य सामाजिक उपन्यास में समाज की विविध मुखी समस्याओं को ही उठाया है, परंतु ` आग्निगर्भा ` में केवल दहेज समस्या को हम भयंकर रूप से प्रस्तुत किया हैं । ` अग्निगर्भा ` सिता नामक ऐसी लडकी की कहानी हैं । जिसे पति की कामुक, स्वार्थी एवं घिन्नौनी इच्छाएँ, ` अग्निगर्भा ` बना डालती हैं और जो जीवन पर्याप्त धैर्यशीला वसुंधरा की तरह अपने भीतर विखंडित होनेवाली ज्वालाओं को निरंतर समेटती रहती हैं । भारतीय नारी के लिए दहेज अभिशाप बन गया है । वर्तमान समाज की इसी समस्या पर लेखनी चलायी हैं।

अत: लेखक ने इसमें दहेज समस्या, नारी समस्या, स्त्री-पुरुष समानाधिकार की समस्या आदि समस्याओं को उठाया है ।

१३) खंजन-नयन (१९८१) --

` खंजन-नयन ` में महाकवि सूरदास के जीवन वृत्त को उपन्यासित किया हैं । जन्मस्थल एवं मृत्यु विधि बचपन ,युवावस्था, जन्मांधता आदि बातें विद्वानों की अदालत से कोई निश्चित फैसला नहीं पा सकी हैं । नागर जी ने अपने दृष्टीकोण से सूर का जीवन चरित्र प्रस्तुत किया हैं । सूर के जन्म से लेकर मृत्युतक की घटनाओं को कलात्मकता के साथ प्रस्तुत किया हैं । बचपन में बेबस एवं करुणा का पात्र अंधा बालक सूर्यनाथ युवावस्था में रसीले एवं दर्दिले गायक तथा अचूक भविष्य वार्ता सूर स्वामी और जीवन के उत्तरार्ध में गोवर्धन के श्रीनाथजी के मंदिर में भजन - कीर्तन पद-रचना करनेवाले भक्त एवं कवि सूरदास सफलतापूर्वक चित्रित किये गये हैं ।

निष्कर्ष --

संक्षेप में नागर की औपन्यासिक यात्रा हिन्दी उपन्यास साहित्य में शीर्ष-स्थानीय है। एक ईमानदार संघर्षों के बीच से रास्ता निकालनेवाला कर्मठ कलाकार के रुप में नागर श्रध्दा के पात्र जाते हैं।

जितनी तन्मयता और आखण्डता से उन्होंने सामाजिक उपन्यासों का सृजन किया है, उतनी ही तन्मयता से ऐतिहासिक उपन्यासों का भी। उनकी ज्यादात्तर कहानियाँ हास्य-व्यंग्य प्रधान हैं। उपन्यासों कहानियों के क्षेत्र में तो उन्होंने प्रयोग किये हैं किन्तु अभिनय और रंगमंच पर किये गये प्रयोग उनके कलाकार साहित्य का अच्छा परिचय देते हैं। ड्रामा प्रोड्यूसर के पद पर कार्य करते हुए उन्होंने रेडिओ रुपकों, नाटकों का मंचन और निर्देशन किया था।

उपन्यास कार, कहानी कार, रेखाचित्र कार, संस्मरण कर्ता, नाट्य सर्जक और व्यंग्य लेखक। वे पत्रकार भी थे, अनुवादक भी थे और स्वतंत्र प्रकृति के होने के कारण तथा समय की आवाज को सुनते हुए फिल्मी कथाओं के लेखक भी। अमृतलाल नागर न केवल वर्तमान के चितेरे हैं, बल्कि इतिहास को समेटते हुए उनकी दृष्टि कवि शिरोमणि तुलसीदास के काव्य में धुली हुई उनके जीवन के नेपथ्य की अंतरंगता को भी औपन्यासिक शिल्प में ढाल सकी हैं।

सामाजिक यथार्थवादी उपन्यासकार के रुप में भी नागर जी में हिन्दी-साहित्य जगत में अपना स्थान बना लिया है। स्वातंत्र्यपूर्व और स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज उनके उपन्यास साहित्य में अमरत्व पा गया है।